بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुतबा जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 21 मार्च 2025, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.

23 मार्च से सम्बंधित हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. के विवेक पूर्ण कथनों के प्रकाश में मसीह मौऊद की नियुक्ति पर चर्चा तथा पाकिस्तानी अहमदियों और उम्मते मुस्लिम: के लिए दुआओं की प्रेरणा।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-21.03.2025

محلہ احمدیہ قادیان پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

اما بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- परसों 23 मार्च है, अहमदिय्या जमाअत के इतिहास में 23 मार्च का दिन अत्यन्त महत्त्व पूर्ण है क्यूँकि 23 मार्च 1889 को हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने बैअत के शुभारम्भ से जमाअत की आधार शिला रखी थी। आप अलै. की बैअत ठीक अल्लाह तआला के वादे के अनुसार और आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्य वाणियों के अनुसार थी। उस समय इसलाम की नय्या डांवाडोल ही थी। अब भी धार्मिक, राजनैतिक एवं सांसारिक दृष्टि से दयनीय है। यद्यपि अनेक मुस्लिम देश तेल की सम्पदा से माला-माल हैं परन्तु उनकी पराकाष्ठा एवं महत्त्व नष्ट हो चुका है। किन्तु उस समय जब आप अलै. ने बैअत ली उस समय के मुसमानों पर आप अलै. का दिल खून के आंसू रोता था। इसलाम पर विशेषतः ईसाइयों की ओर से ताबड़-तोड़ हमले हो रहे थे, कोई जवाब देने वाला नहीं था, मुस्लिम विद्वान डरते रहते थे, लाखों मुसलमान ईसाईयत की गोद में गिर रहे थे।

उस समय जब मुसलमानों की ऐसी दशा थी तो हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ही थे जो अल्लाह तआला के आदेश से खड़े हुए और इसलाम के बचाओ में एक जरिअल्लाह की भूमिका निभाई। आप अलै. ने समस्त धर्मों को जो उस ज़माने में मौजूद थे, जो भी इसलाम अथवा इसलाम के संस्थापक स. पर अपने भाषणों में एवं लेखों द्वारा हमले कर रहे थे, जवाब दिया। बैअत लेने से पहले आप अलै. ने इस दर्द के कारण एक पुस्तक भी लिखी जो ब्राहीने अहमदिय्या के नाम से प्रसिद्ध

है। इसमें आप अलै. ने दुश्मनों के, इसलाम विरोधियों के हमलों के मुंह तोड़ उत्तर दिए और आपने इसमें क़ुरआन करीम के कलामे इलाही होने तथा अनुपम किताब होने और आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे एवं दिव्यात्मा तथा अन्तिम नबी होने के अखंडनीय प्रमाण पेश फ़रमाए। फ़रमाया- जो इन प्रमाणों का खंडन करेगा उसके लिए चुनौती है। फ़रमाया कि जो इसका तीसरा अथवा चौथा या पांचवां भाग भी रद्द कर दे तो दस हज़ार रुपए का पुरस्कार दूंगा, जो उस समय एक बड़ा पुरस्कार था। उस समय मुसलमानों में उत्साह जागा कि इसलाम भी कोई धर्म है। आलिमों ने बड़ी प्रशंसा की। हज़रत मसीह मौऊद अलै. की इसलाम के लिए इस सेवा के कारण लोगों ने कहा कि हमसे बैअत लें। किन्तु आप अलै. को उस समय तक आदेश नहीं मिला था, परन्तु जब आदेश मिला तो बैअत ली। फिर यह भी अल्लाह तआला ने आदेश दिया कि यह भी घोषणा कर दो कि तुम मसीह मौऊद तथा मेहदी मअहूद हो। आप अलै. ने दिसम्बर 1888 ने तबलीग़ के नाम से बैअत के लिए ऐलान प्रकाशित किया। ख़ुदा ने फ़रमाया कि जब तू निश्चय कर ले तो अल्लाह तआला पर भरोसा कर और हमारे सामने और हमारी वह्यी के अनुसार नाव तय्यार कर, जो लोग तेरे हाथ पर बैअत करेंगे वे तुझसे नहीं ख़ुदा से बैअत करेंगे।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि फिर अल्लाह तआला ने निशान भी दिखाए जिनमें विशेष रूप से चन्द्र ग्रहण एवं सूर्य ग्रहण का आसमानी निशान है जिसके बारे में रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया कि मेरे मेहदी के आने का विशेष निशान है जो निश्चित तिथियों पर होना था जो 1894 में पूरब में तथा 1895 में पश्चिम में हुआ। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि इसके अंतर्गत ही यहाँ यह भी बता दूं कि इस रमज़ान में भी चाँद ग्रहण एवं सूर्य ग्रहण होना है तथा इन्हीं तिथियों में होना है और भविष्य में भी हो सकता है कि यह होता रहता है। किन्तु जो चन्द्र एवं सूर्य ग्रहण आप अलै. के ज़माने में हुआ और आप अलै. के दावे के बाद हुआ, उसका अपना महत्त्व है। आप अलै. ने अल्लाह तआला से एक फ़ुरक़ान (भेद करने वाला प्रमाण) तथा निशान माँगा था जो अल्लाह तआला ने दिखा दिया। कुछ अहमदी इन दिनों में जो ग्रहण लग रहा है, उसे निशान बताते हैं, यह अल्लाह तआला ही उचित जानता है। अतएव यदि निशान समझना भी था तो यह एक निरन्तर क्रिया है जो जारी है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि आप अलै. ने 12 जनवरी 1889 को 'तकमील-ए-तबलीग़' के नाम से विज्ञापन प्रकाशित फ़रमाया और उसमें बैअत की दस शर्तें रखीं। हम जानते हैं कि एक अहमदी होने के लिए इन दस शर्तों पर अमल करना तथा इन्हें तन मन धन से स्वीकार करना अनिवार्य है। हुज़ूरे अनवर ने इन दस शर्तों का सारांश बयान करके फ़रमाया कि इन शर्तों पर अनेक श्रद्धालुओं ने बैअत की और अब तक इन्ही शर्तों पर बैअत कर रहे हैं। हमें सोचना चाहिए कि क्या हम इनके अनुसार अमल कर रहे हैं? जमाअत में निष्ठा पूर्ण लोगों की बड़ी संख्या है जो बैअत करके आती है और जान, माल, समय, सम्मान इत्यादि को क़ुरबान करने, दीन की प्रतिष्ठा स्थापित करने तथा इसलाम का सन्देश दुनिया में पहुंचाने के लिए यथासम्भव प्रयास करने के लिए तय्यार रहती है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से इश्क़ का हाल जो हज़रत मसीह मौऊद अलै. के दिल में था, उसका चित्रण एक लेख में इस प्रकार मिलता है। फ़रमाया कि मैं सदेव आश्चर्य की दृष्टी से देखता हूँ कि यह अरबी नबी जिसका नाम मुहम्मद स. है ' सलल्लाहु अलैहि वसल्लम' (हज़ार हज़ार दरूद-ओ-सलाम उस पर) यह किस उच्चतम स्तर का नबी है। उसके उच्चतम स्तर की सीमा का पता नहीं लग सकता तथा उसकी दिव्य प्रभा का अनुमान लगाना इंसान का काम नहीं। खेद है कि जैसा विवेक उसको पहचानने का है, उसके स्तर को नहीं पहचाना गया। वह एकेश्वरवाद जो संसार से गुम हो

चुका था, वही एक पहलवान है जो दोबारा उसको दुनिया में लाया। उसने ख़ुदा से उच्चतम सीमा तक प्रेम किया तथा अत्यंत उच्च स्तर पर मानव जाति से सहानुभूति करने में उसके प्राण घुले। इस कारण से ख़ुदा ने, जो उसके दिल के भेद को जनता था, उसको समस्त नबियों और समस्त अगले पिछलों पर प्रमुखता प्रदान की और उसकी अभिलाषाएं उसके जीवन में ही उसको दीं। वही है जो स्रोत प्रत्येक हित का है और वह व्यक्ति जो उसके हितकारी होने को स्वीकार किये बिना किसी हित का दावा करता है, वह इंसान नहीं है बल्कि शैतान की संतान है, क्यूंकि हरएक फ़ज़ीलत की कुंजी उसको दी गई है। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि ये वे बातें थीं, इश्क़े रसूल स. था, जिसके कारण अल्लाह तआला ने आप अलै. को नियुक्त फ़रमाया। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि इस इश्क़ो मुहब्बत के कारण यह स्तर देता हूँ कि मसीह व मेहदी होने की घोषणा करो और इस्लाम के पुनरोत्थान का वादा आज पूरा करता हूँ तथा तुम्हें इस काम का दायित्व देता हूँ।

और फिर आप अलै. ने इसका हक़ अदा किया, फिर आप अलै. ने अपनी जमाअत को नसीहत फ़रमाई कि मसीह मौऊद के साथ सहाबा रज़ी. जैसे लोग होंगे। अतः जब यह अल्लाह तआला का फ़रमान है, जब हम बैअत में आए हैं कि आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम रोशन करेंगे तथा इस्लाम की तबलीग़ को दुनिया के किनारों तक पहुँचाएँगे, तो फिर हमें सहाबियों का वह रंग भी धारण करना होगा। फ़रमाया कि हमारे सम्पूर्ण मार्ग दर्शक स. के सहाबा रज़ी. ने अपने ख़ुदा एवं रसूल के लिए कैसे कैसे बलिदान दिए। अतएव वह क्या बात थी कि जिसने उन्हें ऐसा बलिदानी बना दिया, वह अल्लाह की सच्ची मुहब्बत का जोश था जिसकी किरणें उनके दिलों में पड़ चुकी थीं। अतः चाहे किसी नबी के साथ मुक़ाबला कर लिया जाए, इसका उदहारण कहीं न मिल सकेगा। अतः यह स्तर आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबियों रज़ी. का है और उनमें जो स्नेह एवं प्रेम था उसका दो वाक्यों में चित्रण किया है- जो स्नेह उनमें है, वह कदाचित पैदा न होती, चाहे सोने का पहाड़ भी दिया जाता। फ़रमाया कि फिर हज़रत मसीह मौऊद अलै. हम से पूछ रहे हैं कि क्या आप लोग ऐसे हैं? सहाबा रज़ी. तो वे थे जिन्होंने अपनी जान, माल ख़ुदा की राह में दे दी।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि हमारे लिए तो इतनी जटिल स्थिति नहीं, अर्थात युद्ध अब नहीं होंगे। हमारे लिए तो जो क़ुरबानी का थोड़ा अवसर दिया है उसमें जान, माल, समय के बलिदान की जो प्रतिज्ञा की है, उसके लिए तय्यार रहना चाहिए। हुज़ूरे अनवर ने हज़रत मसीह मौऊद अलै. की जमाअत को ब्रह्मज्ञान पर आधारित कुछ नसीहतों का वर्णन फ़रमाया। हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने फ़रमाया कि क़ुरआन करीम पढ़ो किन्तु कथाओं एवं कहानियों के रूप में नहीं। एक जगह फ़रमाया कि लोग कैसी सुन्दर वाणी में क़ुरआन पढ़ते हैं परन्तु गले से नीचे नहीं उतरता। क़ुरआन करीम जिसका दूसरा नाम ज़िक्र है इंसान को अपने भीतर छिपी हुई तथा भूली हुई सच्चाइयों को याद दिलाने के लिए आया है। क़ुरआन इस युग में भी ज़िक्र है और इसको सिखाने के लिए एक अध्यापक आकाश से आया जो कि وآخرين منهم की पुष्टि करने वाला है और आज मौजूद है। जो हमारे विरोधी हैं, ये हमारे ही नहीं बल्कि ये ख़ुदा के वादों का सम्मान न करने वाले हैं, ये वे हैं जिनके गले से क़ुरआन नीचे नहीं उतरता, उपदेशक की नसीहत भी नहीं सुनते। ख़ुदा तो धैर्य एवं सुन्दर धारणा से काम लेने के लिए कहता है और ये केवल विरोध करते हैं। आज इस्लाम के अतिरिक्त कोई धर्म नहीं जो लोगों को जीवन प्रदान कर सकता है और ख़ुदा इस काम को करने के लिए माध्यम अपनाता है, चाहे हमें दिखाई दें या नहीं।

जैसे पहले ज़माने में ख़ुदा ने हज़रत मुहम्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को नाज़िल करके नूर उतारा, इस ज़माने में ख़ुदा ने मुझे नाज़िल किया है। मैं ख़ुदा की तरफ़ से हूँ, चाहो तो तुम मुझे मानो अथवा न मानो। ख़ुदा ने चाहा कि अन्तिम दौर में इस्लाम का पुनरुत्थान मसीह मौऊद के हाथ से ही हो, इसी लिए उसको 'कासिर-ए-सलीब (सलीब को तोड़ने वाले)' की उपाधि दी गई है। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि जब ख़ुदा ने हज़रत मसीह मौऊद अलै. को भेजा, तब ये ईसाई फ़ितना इतने ज़ोर से था कि जो पहले ज़माने में नहीं मिलता। तो क्या उस उपद्रव के समय ख़ुदा के स्वाभिमान की यह आवश्यकता न थी कि वह सलीब को तोड़ने वाले को भेजे, इस लिए उसने मसीह मौऊद को भेजा। आज यह इस जमाअत का काम है कि वह मसीह मौऊद अलै. के काम को आगे बढ़ाए और आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम , इस्लाम और क़ुरआन पर आपत्ति करने वालों के सटीक उत्तर दें और इस फ़ितने का सिर कुचलें। यह ख़ुदा का वादा है कि मसीह मौऊद अलै. की सच्चाई दुनिया में फैलनी थी और फैली है और फैलेगी, चाहे अपने विरोध करें या ग़ैर, उनका कोई प्रभाव न होगा।

लोग कहते हैं कि यह मसीह मौऊद क्यूं आया है, जबकि हम इस्लाम के समस्त काम पूरे कर रहे हैं? इसका जवाब स्वंय हुज़ूर अलै. ने दिया है कि तुम्हारी अपनी हालत इसका जवाब है कि आचरण नेक होने के बावजूद नेक प्रभाव क्यूं नहीं निकल रहे। इनके समस्त काम, नेक कर्मों के रंग में नहीं हैं बल्कि केवल एक छिलके के समान हैं जिसमें गीरी (मूल तत्व) नहीं है। मुसलमान ख़ुद भी आज इस बात को मानते हैं कि हम पतन की ओर जा रहे हैं और एक सुधारक को आना चाहिए जो हमारी सहायता करे। फ़रमाया- ये हमारे विरोधी भी हमारे सेवक एवं कर्मचारी हैं कि हमारा पैग़ाम एक प्रकार से धरती पर फैला रहे हैं, चाहे विरोध करके ही सही। मुझे कहते हैं कि दुकानदारी फैलाई हुई है, यदि इसको ठीक कहना है, तो हाँ हमारा काम दुनियादारी के लिए मुर्दे की भाँती है। हमारा काम दीन को नए नए पाखंडों से बचाना है तथा इस्लाम सहित अन्य धर्मों की वास्तविकता को प्रकट करना है। ख़ुदा ने रहमत के रूप में क़ुरआन एवं हुज़ूर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजा। रमज़ान के दिनों में क़ुरआन पढ़ने, समझने, इस्लामी शिक्षाओं को अपनाने और इसका दुनिया में प्रचार अधिक से अधिक करके हमें हज़रत मसीह मौऊद अलै. के मिशन को आगे बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- अन्त में मैं पाकिस्तान के अहमदियों के लिए भी दुआ का निवेदन करना चाहता हूँ। अल्लाह तआला उनके हालात में सुविधा पैदा फ़रमाए। आजकल विरोधी पूरा ज़ोर लगा रहे हैं, हर दिशा से कष्ट देने का प्रयत्न कर रहे हैं, जो भी बहाना उनको मिलता है। इससे उनका उद्देश्य यही है कि अहमदियों को हानि पहुंचाई जाए। अल्लाह तआला इन सब की रक्षा करे। सामान्य रूप से मुस्लिम उम्मत के लिए भी दुआ करें, अल्लाह तआला इनको भी बुद्धि एवं समझ दे और इनके हालात बेहतर करे, इन पर रहम फ़रमाए। मध्य पूर्व के मुसलमान जो हैं उन पर दोबारा अत्याचार का नया दौर शुरू हो गया है। अल्लाह तआला उनको भी इस अत्याचार से सुरक्षित रखे, उनपर दया करे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ.

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131